५. पारिवारिक मूल्य

बताओ तो !

(१) तुम्हारे परिवार में सैर पर जाने का निर्णय कैसे लेते हैं ?

(२) क्या तुम सैर पर जाने के स्थान के विषय में सुझाव देते हो ?

(३) क्या तुम यह बताते हो कि छुट्टियों में किन अतिथियों को बुलाना है ?

(४) परिवार के त्योहार-उत्सव की तैयारी में तुम किस प्रकार सहायता करते हो ?

निर्णय लेने में सहभाग

परिवार में हम सभी लोग एकसाथ रहते हैं । प्रत्येक की रुचि-अरुचि अलग-अलग होती है । विचार और मत भी भिन्न-भिन्न हो सकते हैं । हम भी दूसरों की अपेक्षा अलग हैं; यद्यपि ऐसा होने पर भी अनेक बातों में हमारे विचार और मत दूसरों से मिल सकते हैं । हम में एक-दूसरे के प्रति प्रेम तथा आत्मीयता होती है । हम एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं, खोज-खबर लेते हैं। परिवार की किसी भी बात पर निर्णय लेते समय एक-दूसरे से पूछते हैं। आपस में बातचीत करके ऐसा निर्णय लिया जाता है, जो सबको स्वीकार होगा । इस पद्धति से हम सभी लोग परिवार का निर्णय लेने में सहभागी होते हैं ।

निर्णय लेने में सहभागी होने पर क्या होता है ?

- प्रत्येक को अपनी बात कहने का अवसर मिलता है।
- एक-दूसरे के साथ विचार करके निर्णय लेने से विषय पर चर्चा होती है और सभी पहलू समझ में आते हैं ।
- यह जानकर कि परिवार में हमारे मत को महत्त्व दिया जाता है, हमें परिवार के प्रति अधिक निकटता प्रतीत होने लगती है ।

अपने परिवार के कुछ निर्णयों में जैसा हमारा सहभाग होता है, वैसा ही हमारी सार्वजनिक समस्याओं के विषय में भी होता है । समाचारपत्रों में हम जनसहभाग के कुछ समाचार पढ़ते हैं । ऐसे कुछ प्रातिनिधिक समाचारों का सारांश नीचे दिया गया है । इनमें से सार्वजनिक समस्याएँ कौन-सी हैं और इसके लिए लोगों ने किस प्रकार सहभाग लिया; उसकी कक्षा में चर्चा करो ।

पढ़ो तथा चर्चा करो :

महानगरपालिका के अनुमानपत्र में नागरिकों का सहभाग । खर्च किन मुद्दों पर करना है, यह नागरिक निश्चित करेंगे ।

शहर के विकास प्रारूप में सुधार के सुझाव देने के लिए नागरिकों की भीड़ ।

छह गाँवों को जोड़ने वाली सड़क का उद्घाटन : ग्रामीणों को आनंद । सड़क का निर्णय हो इसलिए छह गाँवों के नागरिकों का सामूहिक प्रयत्न ।

हम यह महसूस करते हैं कि हमारे परिसर में कई छोटे-छोटे परिवर्तन होने चाहिए । परिसर के परिवर्तनों के विषय में सभी लोगों का सामूहिक निर्णय लेना हितकारी होता है । हमारे द्वारा चुनी गई सरकार सार्वजनिक समस्याओं के विषय में निर्णय लेती है । यदि सरकार द्वारा लिया गया कोई निर्णय अनुचित लगे, तो उसपर हम अपना मत दे सकते हैं । इस प्रकार निर्णय प्रक्रिया में हम सहभागी हो सकते हैं ।

थोड़ा सोचो !

परिवार के निर्णय में अवश्य सहभागी बनो । केवल दूसरों की बातें सुनकर उसके आधार पर अपना विचार मत बनाओ । तुम्हें जो कहना है; उसपर अपना मत प्रस्तुत करो ।

बताओ तो !

आगे दिए गए प्रसंगों को ध्यान से पढ़ो । इनमें से किसका व्यवहार ईमानदारी का है, वह बताओ :

(१) आफरीन ने मीनू से पेन्सिल माँगी । लिखने के बाद उसने पेन्सिल वापस कर दी ।

(२) शमा साइकिल से गिर पड़ी । माँ को बताते समय उसने कहा, ''नेहा ने मुझे गिराया, इसलिए मैं गिर गई ।''

(३) मेरी ने रिक्शे में मिली थैली निकट के पुलिस थाने में जमा कर दी ।

ईमानदारी तथा बेईमानी के परिणाम

हमसे अच्छी-बुरी घटनाएँ घटित होती रहती हैं । कभी भूलें भी हो जाती हैं । कोई भूल हो गई है; यह बात ध्यान में आते ही, उसके विषय में माता-पिता, भाई-बहनों तथा मित्र से खुलकर बात करनी चाहिए । परिणामस्वरूप हमसे जो गलती हुई है; उसे सुधारने का अवसर मिलता है और हमारी ईमानदारी भी दिखाई देती है । इसके साथ-साथ अपना काम सच्चाई से करना भी आवश्यक है । रिश्तों के पारस्परिक विश्वास को प्रयत्नपूर्वक बनाए रखना और किसी को धोखा न देना भी ईमानदारी का लक्षण है । ईमानदारी हमें निर्भय बनाती है । इसके विपरीत बेईमानी का व्यवहार करने पर हमारा आत्मविश्वास कम होता है । परिवार तथा अपने सार्वजनिक जीवन में भी हमें ईमानदारीपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । ईमानदार व्यक्ति के प्रति सब में आदर की भावना होती है । ईमानदारी हमारी शक्ति है ।

क्या तुम जानते हो ?

सन २०११ में भारत विरुद्ध वेस्ट इंडीज क्रिकेट मैच में आरंभ के ही ओवर में सचिन तेंडुलकर का कैच वेस्ट इंडीज के गेंदबाज ने लपक लिया । गेंदबाज ने एंपायर से अपील की । एंपायर को लगा कि गेंद का स्पर्श बल्ले से हुआ नहीं है इसलिए उसने तेंडुलकर को 'नॉट आऊट' होने का निर्णय दिया परंतु तेंडुलकर को मालूम था कि बल्ले को गेंद का स्पर्श हुआ है इसलिए 'नॉट आऊट' घोषित होने पर भी सचिन तेंडुलकर मैदान से पवेलियन में लौट आए ।

सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी

सार्वजनिक जीवन में भी ईमानदार होने पर सार्वजनिक सेवा-सुविधाएँ हमें अच्छी तरह मिलती हैं । बस अथवा रेल द्वारा बिना टिकट यात्रा करने पर क्या होगा ? हमारी परिवहन व्यवस्था घाटे में आ जाएगी और कुछ दिनों में बंद हो सकती है । यदि प्रत्येक व्यक्ति ईमानदारी से टिकट लेकर चले तो यह समस्या उत्पन्न नहीं होगी ।

ईमानदारी के व्यवहार से सार्वजनिक जीवन की कार्यक्षमता में वृद्धि की जा सकती है । ईमानदारी का बोध हमारे सार्वजनिक जीवन के अनुशासन तथा कार्यक्षमता की वृद्धि में उपयोगी सिद्ध होता है ।

सहयोग से लाभ

परिवार में हम एक-दूसरे को सहयोग करते रहते हैं । इसी प्रकार सामूहिक खेल खेलते समय खिलाड़ियों में पारस्परिक सहयोग जितना अधिक होता है, उतना उनका खेल अच्छा होता है । खेल की सहयोग भावना खेल तक ही सीमित न रखकर उसे अपने सामाजिक जीवन में भी लानी चाहिए । सामाजिक जीवन में सभी को सहयोग की आवश्यकता होती है । हमें भी दूसरों के सहयोग की आवश्यकता होती है । गाँव अथवा शहर का मेला, उर्स, रैली आदि कार्यक्रम एक-दूसरे के सहयोग से ही यशस्वी रूप में संपन्न होते हैं ।

अब क्या करना चाहिए ?

(१) रास्ता भटका हुआ बच्चा तुम्हें मिल गया ।

(२) सैर पर जाने के बाद तुम्हें पता चला कि तुम्हारी सहेली खाने का डिब्बा घर पर भूल गई है ।

(३) इमारत की लिफ्ट में कुछ व्यक्ति फँस गए हैं ।

पढ़ो और चर्चा करो :

नीचे दिया गया संवाद पढ़ो । इसमें विवाद का मुद्दा कौन-सा है और उसे कैसे हल किया गया, इस विषय पर चर्चा करो :

सहिष्णुता

हम सभी में कुछ गुण-दोष होते हैं । अभिभावकों तथा सखा-सहेलियों की मदद से हम अपने दोष दूर कर सकते हैं । एक-दूसरे के विचार हर समय एक-दूसरे को स्वीकार होंगे, ऐसा नहीं होता । हमारे मित्रों के बीच कभी-कभी मतभेद होते हैं । ऐसे समय में 'मैं ही सही हूँ', ऐसा न मानकर दूसरों की बातें भी समझनी चाहिए । समय पड़ने पर दूसरों की बातों को भी सुनना चाहिए । इससे सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती है और उसका पोषण भी किया जा सकता है । सहिष्णुता का अर्थ है- अपने से भिन्न मतों का आदर करना ।

हमारे देश में सहिष्णुता को विशेष महत्त्व दिया जाता है । विविध धर्मों, संप्रदायों, परंपराओं तथा रीति-रिवाजों का पालन करने वाले अनेक लोग यहाँ रहते हैं । इन कारणों से सभी को सहिष्णुता का पालन करना आवश्यक है । विविधता की सुरक्षा सहिष्णुता के कारण होती है । विविधता हमारे सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाती है । सहिष्णुता सामाजिक सौहार्द का पहला चरण है । इसके कारण हम दूसरों का भी विचार सहानुभूतिपूर्वक करते हैं । अपने परिसर की समस्याओं के निराकरण का प्रयत्न हम सहिष्णुता के कारण करते हैं ।

स्त्री-पुरुष समानता

मनुष्य के रूप में लड़का-लड़की अथवा स्त्री-पुरुष समान होते हैं । उनका स्तर समान होता है । लड़का और लड़की में भेदभाव न करते हुए दोनों को ही समान मानना स्त्री-पुरुष समानता है । लड़कों और लड़कियों को एक-दूसरे का आदर करना चाहिए । अपने मित्रों की संगति में हम सभी एक-दूसरे को समान ही मानते हैं । समानता की यह भावना हमें भविष्य में भी नागरिक के रूप में बनाए रखनी चाहिए ।

समानता की भावना में वृद्धि होने के कारण सभी लोग प्रगति कर सकते हैं । सभी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं । भोजन, वस्त्र, निवास, स्वास्थ्य तथा शिक्षा स्त्री और पुरुषों की समान आवश्यकताएँ हैं । समानता के लिए इन आवश्यकताओं की पूर्ति समान रूप से होनी चाहिए । ऐसी सुख-सुविधाओं पर स्त्री और पुरुष का समान अधिकार होता है । इसी प्रकार सभी स्त्री-पुरुषों को प्रगति के समान अवसर मिलने चाहिए ।

- **स्त्री-पुरुष समान होते हैं, इस विषय पर घोषवाक्य तैयार करो ।**

अब क्या करना चाहिए ?

कुछ परिवारों में नीचे दिए अनुसार परिस्थितियाँ हो सकती हैं ।

(१) कुछ घरों में पहली बार केवल लड़के के लिए बस्ता, गणवेश तथा कॉपियाँ खरीदी जाती हैं । लड़कियों के विषय में टाल-मटोल किया जाता है ।

(२) कबड्डी के खेल में पराजित हुए राजू को रोते देखकर दिनेश ने कहा, 'क्या लड़कियों की तरह रोते हो !'

(३) वंदना को गेंद और बल्ला बहुत पसंद है परंतु उसे बच्चों का खेल चौका-चूल्हा (भातुकली) खेलने के लिए छोटे खिलौने के बर्तन और गुड़िया लाकर दी जाती है ।

(४) सारिका रसोई तथा घर के कार्यों में अपनी माँ की सहायता करती है । उसके भाई को ये काम करने के लिए कभी नहीं कहा जाता ।

इसे सदैव ध्यान में रखो !

ईमानदारी के कारण सार्वजनिक जीवन की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है । समय, पैसा तथा मनुष्यबल के अपव्यय को टाला जा सकता है ।

हमने क्या सीखा ?

- परिवार के छोटे-बड़े निर्णयों में सबका सहयोग होना चाहिए ।
- हमारे व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी होनी चाहिए ।
- सहिष्णुता तथा सहयोग के कारण हमारा सामूहिक जीवन निरामय और सामंजस्यपूर्ण होता है ।
- सहिष्णुता के कारण विविधता की सुरक्षा हो सकती है ।
- स्त्री-पुरुष समान होते हैं । इनमें भेदभाव करना उचित नहीं है ।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो :

(अ) ईमानदारी हमारी ..... है ।

(आ) सामाजिक जीवन में सभी को ..... की आवश्यकता होती है ।

(इ) हमारे देश में ..... प्रवृत्ति को विशेष महत्त्व दिया जाता है ।

(ई) समानता की भावना में वृद्धि होने के कारण सभी लोग ..... कर सकते हैं ।

२. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) परिसर के परिवर्तनों के विषय में निर्णय किसे लेने होते हैं ?

(आ) सहिष्णुता का अर्थ क्या है ?

(इ) स्त्री-पुरुष समानता किसे कहते हैं ?

(ई) स्त्री-पुरुषों की समान आवश्यकताएँ कौन-सी हैं ?

३. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

(अ) परिवार की निर्णय प्रक्रिया में तुम किस प्रकार सहभागी होते हो ?

(आ) सहिष्णुता की भावना कैसे उत्पन्न होती है ?

उपक्रम :

१. सहिष्णुता और स्त्री-पुरुष समानता के मूल्यों से संबंधित समाजसुधारकों की कथाएँ अथवा उनके अनुभव प्राप्त करके अपनी कक्षा में उनका कथन करो ।

२. तुमने अपने वैयक्तिक जीवन में पिछले पंद्रह दिनों में जो-जो कृतियाँ ईमानदारी से कीं, उनकी सूची तैयार करो ।

* * *

I67VM2